उत्तराखंड की मानसखंड कॉरिडोर यात्रा

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड पर्यटन विभाग भारतीय रेलवे के सहयोग से **कुमाऊँ क्षेत्र** के प्राचीन मंदिरों को लोकप्रिय बनाने के लिये **'मानसखंड कॉरिडोर यात्रा'** शुरू करेगा।

मुख्य बिंदु:

- तीर्थयात्रा के लिये यात्रियों को **पुणे से पिथौरागढ़ ज़िले के टनकपुर** तक ले जाने के लिये एक समर्पित ट्रेन सेवा की व्यवस्था की गई है।
    - ट्रेन **दो बैचों में 600 से अधिक तीर्थयात्रियों** को **'मानसखंड'** के प्रसिद्ध मंदिरों तक ले जाएगी, जो **प्राचीन हिंदू ग्रंथों में उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र को संदर्भित करने के लिये इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्यांश है।**
- टूर पैकेज के तहत श्रद्धालुओं को **टनकपुर, चंपावत, पिथौरागढ़ और अल्मोड़ा** के मंदिरों एवं अन्य धार्मिक स्थानों पर ले जाया जाएगा तथा **इन मंदिरों के पौराणिक महत्त्व** के बारे में जानकारी दी जाएगी।
- चंपावत में **बालेश्वर, मनेश्वर एवं मायावती** मंदिरों के दर्शन, हाट कालिका, **पिथौरागढ में पाताल भुवनेश्वर मंदिर, चितई में जागेश्वर तथा गोलू देवता मंदिर, नंदा देवी, कसार देवी, अल्मोडा में कटारमल, उधम सिंह नगर में नानकमत्ता साहिब गुरुद्वारा** और **नैना देवी मंदिर के दर्शन नैनीताल में तीर्थयात्रियों के लिये यात्रा कार्यक्रम का हिस्सा हैं।**

कुमाऊँ क्षेत्र

- इसमें राज्य के छह ज़िले शामिल हैं: **अल्मोडा, बागेश्वर, चंपावत, नैनीताल, पिथोरागढ़ और उधम सिंह नगर।**
- ऐतिहासिक रूप से **मानसखंड और फिर कुर्मांचल** के रूप में जाना जाने वाला कुमाऊँ क्षेत्र इतिहास के दौरान कई **हिंदू राजवंशों द्वारा शासित** रहा है।
- **कुमाऊँ मंडल की स्थापना वर्ष 1816 में हुई थी,** जब अंग्रेज़ों ने गोरखाओं से इस क्षेत्र को पुनः प्राप्त किया था, जिन्होंने वर्ष 1790 में कुमाऊँ के तत्कालीन साम्राज्य पर कब्ज़ा कर लिया था।
- स्वतंत्र भारत में राज्य को उत्तर प्रदेश कहा जाता था। **वर्ष 2000 में,** कुमाऊँ सहित **उत्तर प्रदेश से अलग होकर नया राज्य उत्तराखंड बनाया गया।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/uttarakhand-s-manaskhand-corridor-yatra